व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 21 अंक : 87

अप्रैल-जून 2026

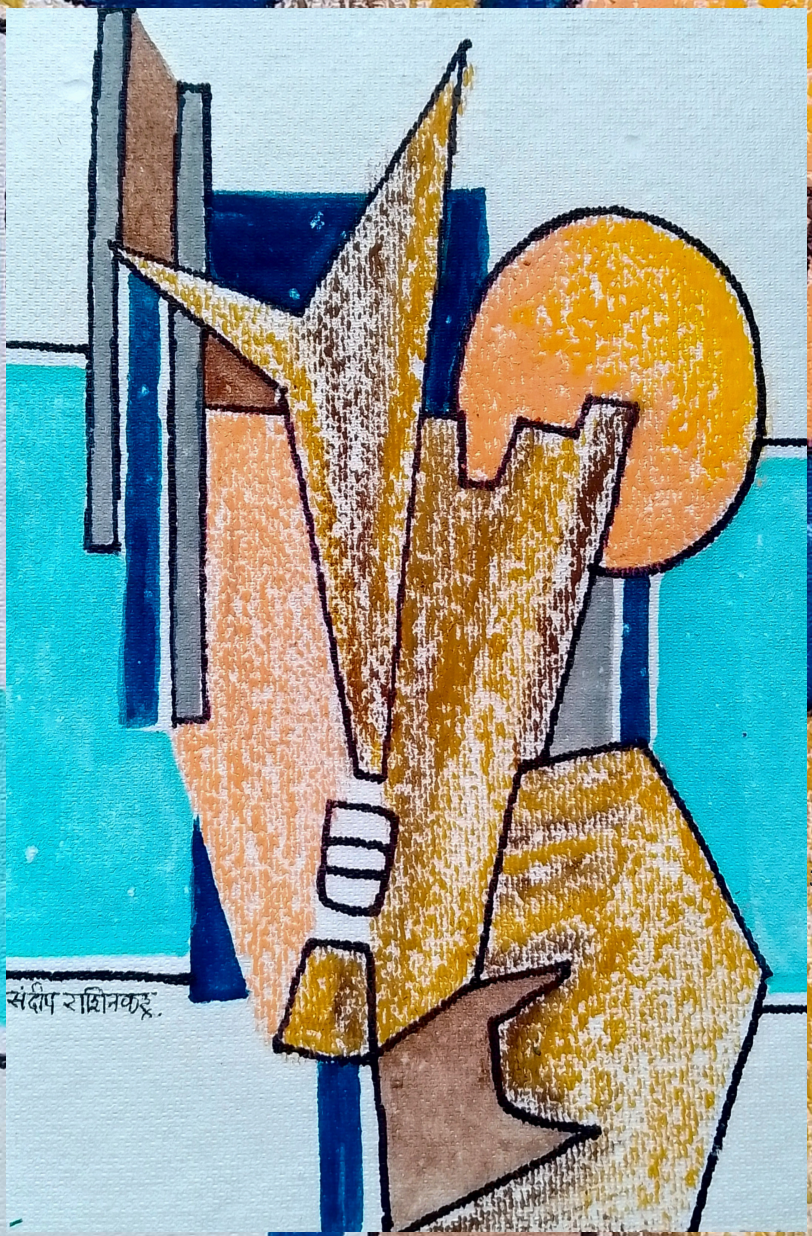

द्विकोणीय में–

ज्ञान चतुर्वेदी,
अतुल चतुर्वेदी,
अजय अनुरागी एवं
लालित्य ललित
की कृतियों पर चर्चा

परिदृश्य में–

विश्वनिवास मिश्र,
प्रभात कुमार मुखोपाध्याय,
संसारचंद

चिंतन में–

गिरीश पंकज,
राजेंद्र सहगल,
विजयशंकर चतुर्वेदी,
विवेक रंजन श्रीवास्तव

संदीप राशिनकर

मूल्य ₹ 20

व्यंग्य यात्रा सम्मान समारोह-2026

विष्णु नागर को रवींद्रनाथ त्यागी शीर्ष सम्मान, विनोद कुमार 'विक्की' को रवींद्रनाथ त्यागी सोपान सम्मान, स्नेहलता पाठक को 'शारदा त्यागी स्मृति सम्मान'। संदीप राशिनकर को 'शब्दान्वेषी कला भूषण व्यंग्य यात्रा सम्मान'। बी.एल. आच्छा तथा संजीव कुमार को 'व्यंग्य यात्रा व्यंग्य चिंतक सम्मान'। हरीश पाठक को 'धर्मवीर भारती स्मृति व्यंग्य यात्रा सम्मान'। व्यंग्य यात्रा लोकार्पण। व्यंग्य शुभचितकों की उपस्थिति।

ममता कालिया को साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मनित करते माधव कौशिक एवं कुमुद शर्मा। नरेश सक्सेना को भारतीय भाषा परिषद् सम्मान, राकेश शर्मा को साहित्य-सांस्कृतिक पत्रकारिता सम्मान, प्रेम विज को चंडीगढ साहित्य अकादमी सम्मान। हार्दिक बधाई।

'हंस' पत्रिका के 'कहानी-वहानी' आयोजन में अनमिका, रश्मि रावत एवं विवेक मिश्र, जवाहर कर्नावट को वातायन शिखर सम्मान, जोया अहमद हुसैन के कहानी संकलन 'वाह री जिंदगी' का लोकार्पण। हिंदी भवन का ढाई आखर साहित्योत्सव।

टी पी झुनझुनवाला के नाटक 'यहां बंदे सस्ते मिलते हैं का विमोचन, प्रलेस के मंच पर लालित्य ललित की सात पुस्तकों का लोकार्पण एवं चर्चा, डॉ. संजीव कुमार की कृति 'रामायण : प्रश्नों के उत्तर' का लोकार्पण एवं चर्चा

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

अप्रैल-जून 2026

वर्ष-21 **अंक-87**

एक अंक : 20 रुपए
पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
premjanmejai@gmail.com
yatravyangya2004@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित।

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री

मोबाइल : +91-9911077754
+91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ- **1-3**
चंदन घिसैं- **4-6**
सेवाराम त्रिपाठी, अरविंद तिवारी, जवाहर कर्नावट, नरेश जैन, स्वाति चौधरी, प्रभाशंकर उपाध्याय, मोहम्मद हुसैन हाटपीपल्यावाला
पाथेय- **7-10**
विद्यानिवास मिश्र- राजधानी में बंदर और घोड़े 7
प्रभात कुमार मुखोपाध्याय- कुलदेवता 9
संसार चंद्र- यह नई कविता है 11
चिंतन- **13-22**
गिरीश पंकज- युवा व्यंग्यकारों का दायित्व 13
विजयशंकर चतुर्वेदी- परसाई की भाषा 15
राजेन्द्र सहगल- ...व्यंग्यालोचना का परिदृश्य 18
विवेक रंजन श्रीवास्तव- व्यंग्य की उपयोगिता... 21
गद्य व्यंग्य- **23-72**
विनोद शाही- युगांत की पूर्व-संध्या 23
मुकेश भारद्वाज- एक था राजा 25
सुभाष राय- लेखक का आत्मकथ्य 26
शशांक भारतीय- मंगल ग्रह पर भाषण 28
साकार श्रीवास्तव 'फलक'- गली का कुत्ता 29
फारूक आफरीदी- दुमदार और दमदार... 30
अरविंद तिवारी- झरबेरी के बेर और अज्ञेय... 31
निर्मल गुप्त- कटखने कुत्ते और अपराधबोध 32
विप्रम- रोचक : भाग मित्रा, भाग! 33
सच्चिदानंद जोशी- आयोजक सिर्फ आयोजक... 34-35
घनश्याम अग्रवाल- कुर्बानी 35
सुधीर सिंह- सिलेबस का अंतिम पन्ना 35
रमेश सैनी- बक्से में कुछ तो है 36
अर्जुन चव्हाण- बच्चा किस पर गया 38
सुभाष चंदर- ...पर इश्क : एक सच्ची कथा 39
अर्जुन चव्हाण- वर्ना बदलाव कोई बड़ी बात 42
मुकेश 'असीमित'- किसका विकास, किसका... 43
दामोदर दत्त दीक्षित- महाकवि और महाद्वार 46
नंदकिशोर बर्वे- जाति न पूछो भ्रष्टाचार... 47
श्याम सखा श्याम- इंटेंसिव कैश यूनिट 49
श्रीकांत चौधरी- सदी के महाभारत में... 50
संदीप भटनागर- मैं शपथ लेता हूँ कि... 53
केदार शर्मा- ...यह रील की दुनिया 54
अयोध्या प्रसाद- उद्घाटन के बहाने 55
श्रीति राशिनकर- इस नखरे की खान... 56
हरिशंकर राढ़ी- ...लास्ट रिचुअल्स पैकेज 57
राजेश ओझा- लाइक/कमेण्ट 58
सुधा कुमारी- ठीके पर आत्माएं 59
परेश चतुर्वेदी- शर्त-ए-जमाना 60
रमेश चंद्र- प्रेम गली नाहीं सांकरी...! 61
श्रद्धा जलज घाटे- रिजॉर्ट वाली शादी... 63
प्रभाशंकर उपाध्याय- होवे जो एडजेस्ट... 64
प्रताप मोहन भारतीय- जेब कतरा 65
जमुना कृष्णराज- मुख्यमंत्री से साक्षात्कार 66
सुभाष काबरा- झोले 67
हरेंद्र प्रताप- न्याय चाहिए भगवान को 70
शिव नारायण- भ्रष्टाचार की संस्कृति 71
मीना सदाना अरोड़ा- कुछ प्रहार (बाउंड्री पार) 72
पद्य व्यंग्य **73-80**
दिविक रमेश- हाँ मैं कंधा हूँ, कोश से बाहर: सुबह 73
गुरविंदर बांगा- गजलें 74
शैलेन्द्र शरण- बेचैनी में शामिल, वह 75
यश मालवीय- दिल्ली आ गए... 75
जसवीर त्यागी- तीन कविताएं 76
रामशरण जोशी- पहली बार 77
अशोक बत्रा- विशेषण 78
मुकुल शर्मा- ल से लोकतंत्र 78
सुरेन्द्र कल्याण बुटाना- जब पेड़ कटता है 79
मलिक राजकुमार- कविताएं 79
नीलम वर्मा- वियोग-दिवस 79
यशपाल सिंह- यश, वशिष्ठ अनूप, आशीष द्विवेदी 'साथी' प्रियंका सौरभ 80
द्विकोणीय **81**
'रोशनी की शिनाख्त' पर द्विकोणीय
प्रेम जनमेजय- अंधेरा इतना भी नहीं है कि... 81
ज्ञान चतुर्वेदी- अँधेरों की जेब में... 82
कैलाश मंडलेकर- एक आकलन 85
श्रीकांत आप्टे- वाकई है रोशनी की शिनाख्त 87
'व्यंग्य आलोचना के विविध आयाम' पर द्विकोणीय
प्रेम जनमेजय- व्यंग्य आलोचना पर कुछ नोट्स 88
अतुल चतुर्वेदी- कुछ शब्द 89
विवेक कुमार मिश्र- ...सन्नाटे को तोड़ने के क्रम में 90
शरद उपाध्याय अतुल चतुर्वेदी को आलोचकीय दृष्टि 91
'जयपुर ताबीज' पर द्विकोणीय
प्रेम जनमेजय- ...पर्यायवाची होने के खतरे 93
अजय अनुरागी- अपना शहर अपने लोग 94
रमेश सैनी- जीवन की विडंबनाओं को खोजता 95
अरविंद तिवारी- स्मार्ट शहर का ताबीज 97
पाण्डेय जी के किस्से और...पर द्विकोणीय
प्रेम जनमेजय- ...चुनौती मानने वाला रचनाधर्मी 99
लालित्य ललित- मैं अपने पात्रों को जीता हूँ 100
नन्द भारद्वाज- सुलझी और संतुलित भाषा 101
हरीश अरोड़ा- ...विडंबनाओं का सजीव दस्तावेज 101
सूर्यकांत शर्मा- व्यंग्य की भाषा 102
समीक्षा **103-117**
जय प्रकाश पांडेय- 'साहित्य के बुक कैफे से' 103
ममता कालिया, विष्णु नागर शहरयार,
और दिव्या माथुर की किताबें
कुमार अनुपम की किताब 105
यशवंत व्यास- की किताब 'फंदा यहाँ है...' 106
'विश्वरंग' का 'काव्य आलोचना विशेषांक' 107
पुस्तकों संग संवाद 107
प्रेम जनमेजय- टी.पी. झुनझुनवाला, जोया अहमद हुसैन, समीक्षा
तैलंग की किताबें 108
अंतरंग का व्यंग्य विशेषांक 112
शशि सहगल- व्यंग्य विमर्श के सशक्त... 113
रास बिहारी गौड़- आज के समय को जुबान 114
महेन्द्र नेह- असत्यमेव जयते 114
यशोधरा भटनागर- 'जड़ें बरगद की' 115
प्रोफेसर तोमिओ मिजोकामि- 'यादों में गौरैया 116
दिनेश अवस्थी- व्यंग्य : कल आज और... 117
राहुल देव- गधों का आदमी विमर्श 118
व्यंग्य यात्रा को प्राप्त कुछ पुस्तकें 119
दामोदर दत्त दीक्षित- सर्जना का संसार 120
समाचार **121-128**

आरंभ

कॉकरोच का काटना

धार्मिक बहसों के दौर में कॉकरोच पर बहस आरंभ हो गई। विकसित भारत में कॉकरोच पर बहस राष्ट्रहित में नहीं है। कॉकरोच को मुख्यधारा में आने का अधिकार नहीं है। सीकरी के संत सजग हो गए हैं। अनेक ब्रांड के 'हिट' बाजार को समृद्ध करने के लिए मैदान में उतर गए हैं। सीकरी के संतों को कॉकरोच-बोध हुआ है। धर्मांतरित कवि को भी कॉकरोच-बोध हुआ है। कॉकरोचों के कारण उसका सीकरी मार्ग अवरुद्ध है। चापलूसी की इतनी सीढ़ियाँ चढ़ने के बावजूद सीकरी सुध नहीं ले रही है। प्रवचनों की बाढ़ में पद्मा ने कुटिया को महल बना दिया, पर पद्म पर बैठी 'श्री' (लक्ष्मी) अभी तक नहीं आईं। यह सब कॉकरोचों के कारण हुआ है। लाख कह दिया कि अब मैं कवि नहीं हूँ, मेरा धर्मांतरण हो गया है पर...। जब भी कहता हूँ प्रभु की शरण में जाओ, तो कातर स्वर में कहते हैं- "हमारे तो प्रभु आप हैं। आपकी कृपा बनी रहे।" इन पर कृपा कर आलीशान महल में दावत दे दी, फिर भी ये लालची कवि जी, 'कवि जी-कवि जी' करते शीशमहल की नालियों में कवियाते रहते हैं।

दो दिन पहले कवि को शीशमहल में कॉकरोच दिख गया। कवि आग-बबूला हो गया। दूसरों को शांति का मार्ग दिखाने वाला धर्म प्रचारक, भूतपूर्व धर्मांतरित कवि अशांत हो गया। सुबह-सुबह महल में घृणित कॉकरोच ने 'हैं-हैं' की शैली में, बिना पूर्व सूचना के प्रवेश किया। इनका कुछ तो करना होगा वरना...। धर्मांतरित कवि ने कॉकरोचों के विरुद्ध क्रोधित वक्तव्य जारी करवा दिया। उसे पूरा विश्वास है कि उसका वक्तव्य हिट होगा और कॉकरोचों के विरुद्ध उसकी इमेज एक योद्धा की बनेगी। प्रभु प्रसन्न होंगे, कृपा करेंगे। दया का कोई तो द्वार खुलेगा।

पहली बार बचपन में जब मुझे कॉकरोच दिखा था, तो मैं उसे मारने दौड़ा। माँ ने मुझे रोकते हुए कबीर का भजन गाया-

"दया कौन पर कीजिए, का पर निर्दय होय। साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय।।"

मेरी माँ ने मुझे समझाया था कि तिलचट्टे में अद्‌भुत जिजीविषा होती है। इसका सर कट भी जाए तो यह हार नहीं मानता है। लोग इससे चाहे कितनी नफरत करें, यह मरे हुए पौधों और कचरे को खाकर सड़ाने और मिट्टी को उपजाऊ बनाने में मदद करता है। तिलचट्टे अंधेरे में रहते हैं और इकट्ठा होकर रहते हैं। ये अंधेरे से डरते नहीं हैं। यह किसी महल में जन्म नहीं लेता है, यह साधनहीन के घर जन्म लेता है। बनी-बनाई व्यवस्थाओं का नाश करता है।

पिछले दिनों कॉकरोच के माध्यम से विपरीत समय के विरुद्ध संघर्षरत युवा पीढ़ी को कोसा गया। युवा हर युग के वर्तमान का भविष्य होता है। वह आगे की सोचता है। उसकी दुरुह कल्पनाएँ हमारी समझ से परे होती हैं।

व्यंग्य यात्रा का संभावित युवा विशेषांक

'व्यंग्य यात्रा' ने युवाओं को अपने मंच पर सदा प्राथमिकता दी है। वर्तमान समय में उनके विरुद्ध की गई टिप्पणियों ने मुझे 'व्यंग्य यात्रा' के आगामी अंक का लक्ष्य दिया- युवा व्यंग्यकार विशेषांक।

आज से तेरह वर्ष पूर्व, जनवरी 2013 में, मैंने 'व्यंग्य यात्रा' का 'युवा रचनाकार विशेषांक' प्रकाशित किया था। इस अंक में त्रिकोण के छह कोण थे, जिनमें उस समय व्यंग्य का प्रखर स्वर बने युवा व्यंग्यधर्मियों के रचनाकर्म पर चर्चा की गई थी। इस विशेषांक में शामिल थे- पंकज सुबीर, अनुराग वाजपेयी, आशीष दशोत्तर, अजय अनुरागी, अनुज खरे, अर्चना चतुर्वेदी, ललित शर्मा, रामनारायण मीना 'हलधर', कृष्ण कुमार 'आशु', लालित्य ललित, अरुण कुमार जैमिनी, अकबर महफूज आलम रिजवी, अनूप मणि त्रिपाठी, ओम नागर, संतोष त्रिवेदी, अलंकार रस्तोगी, गौरव त्रिपाठी, विवेक मिश्र, पंकज प्रसून, मयंक सक्सेना। आज के समय में इनमें से अनेक प्रतिष्ठित व्यंग्यधर्मी हैं।

अक्टूबर 2013 में एक और विशेषांक प्रकाशित किया जिसमें- ज्ञान चतुर्वेदी, गौतम सान्याल, प्रेम जनमेजय, यज्ञ शर्मा, प्रदीप पंत, सूर्यबाला, हरीश नवल, तरसेम गुजराल, बालेंदु शेखर तिवारी, सूर्यकांत नागर, अतुल चतुर्वेदी, राजेंद्र सहगल, संतोष खरे, मनोहर पुरी, अविनाश वाचस्पति आदि वरिष्ठ व्यंग्यकारों ने युवा व्यंग्यकारों पर विस्तृत आलेख लिखे थे। इसी अंक में सातवें कोण के रूप में सुचिता श्रीवास्तव, सुमित प्रताप सिंह और संजीव ठाकुर के व्यंग्य लेखन को प्रस्तुत किया गया था।

इक्कीसवीं सदी में अनेक युवा अपने व्यंग्य बाणों के साथ लेखन के युद्ध क्षेत्र में उतरे हैं। सबके तरकश, व्यंग्य के भविष्य निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करने की दृढ़ इच्छा से भरे हुए हैं। इक्कीसवीं सदी की यह पीढ़ी सोशल मीडिया जैसे आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से लैस है और अपने समय को एक अलग दृष्टि से देख-परख रही है। उसके सामने अनेक चुनौतियां हैं। समकाल में टच स्क्रीन मोबाइल, लैपटॉप आदि जितने 'टचशील' होते जा रहे हैं, उतने ही इनके उपभोक्ता (यूजर्स) असंवेदनशील होते जा रहे हैं। कृत्रिम मेधा (AI) मौलिकता का हनन कर रही है। राजनीतिक, आर्थिक और विशेषकर धार्मिक क्षेत्र की विसंगतियां चुनौती दे रही हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि व्यंग्य की युवा पीढ़ी इन विसंगतिजन्य चुनौतियों को पराजित करेगी। ऐसे में मुझे अमेरिकी कवि फिलिप लेविन का यह कथन याद आ रहा है- Listen to these young poets and you'll discover the voice of the present and hear the voice of the future before the future is even here.

अंक में 'त्रिकोणीय' का एक कोण नहीं, द्विकोणीय के चार कोण पत्रिका का संपादन अंतिम चरण में उपजी अनेक घटनाओं/दुर्घटनाओं से ग्रस्त रहता है। इस बार श्रीकांत चौधरी और सुभाष चंदर पर

'त्रिकोणीय' प्लान किया था। बिना लेखकीय सहयोग के 'त्रिकोणीय' अधूरा रहता है। इस बार मनोवांछित सामग्री के विलंब ने जब संपादक के धैर्य की परीक्षा लेनी आरंभ की और लगने लगा कि अधिक परीक्षा अंक को समय पर नहीं आने देगी, तो इसे अगले अंक के लिए स्थगित किया। 'द्विकोणीय' पर ध्यान दिया। इतना ध्यान दे दिया कि सामग्री में चार गुना वृद्धि हो गई। चिंतन, त्रिकोणीय और द्विकोणीय विभिन्न स्तंभ हैं पर लक्ष्य सबका एक है- व्यंग्य विमर्श। इधर लिखा बहुत जा रहा है, अत: बहुत आवश्यकता है कि उस लिखे पर विस्तार से चर्चा हो।

'व्यंग्य यात्रा' का बेहतरीन साइड इफेक्ट है मेरी अध्ययनशीलता में वृद्धि। इस पत्रिका ने चाहे मेरे लेखन में अवरोध उत्पन्न किए हों, मेरे लेखन को बैक सीट पर ला फेंका हो, वहीं मुझे हर अंक में लिखने को विवश भी किया है। 'व्यंग्य यात्रा' के लिए संपादकीय, 'त्रिकोणीय', 'द्विकोणीय' और किसी किताब पर समीक्षात्मक लिखना ही होता है। किसी किताब पर लिखना हो अथवा हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, रवींद्रनाथ त्यागी, नरेंद्र कोहली आदि विशेषांकों के लिए अपनी रचनात्मक भूमिका निभाने के आलेख लिखने से मैं कैसे बच सकता हूँ?

इस अंक में मैंने ज्ञान चतुर्वेदी, अतुल चतुर्वेदी, अजय अनुरागी और लालित्य ललित पर आलेख लिखे हैं। पुस्तक के साथ संवाद करना मुझे अच्छा लगता है। 'व्यंग्य यात्रा' में ढेरों पुस्तकें समीक्षा के लिए आती हैं। किताबों के लोकार्पण और चर्चा पर जाना होता है। उन्हें पढ़ता ही हूँ; बिना पढ़े किसी लोकार्पण या चर्चा गोष्ठी का हिस्सा नहीं बना हूँ। मुझे किताब की पीडीएफ नहीं, हाथ में पुस्तक लेकर पढ़ने की आदत है। इस अंक में टी.पी. झुनझुनवाला, जोया अहमद हुसैन और समीक्षा तैलंग पर लिखे गए आलेख इसी सोच का फल हैं। 'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशनार्थ आई ढेरों रचनाएँ पढ़ने की विवशता मुझे आज के समय में लिखी जा रही रचनाओं से परिचित करवाती है।

यह विसंगत समय है। सत्ताधारी कोई हो, विसंगत समय में व्यंग्य उसके विरोध में रहता ही है। व्यंग्य का मूल स्वर विरोध ही तो है। आज भी सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक विसंगतियाँ चुनौतियाँ दे रही हैं। विसंगतियों पर व्यंग्यकार व्यंग्य की तिर्यक भाषा में स्वयं को अभिव्यक्त करे तो स्वाभाविक है। जब अन्य विधाओं के रचनाकार तिर्यक भाषा का प्रयोग करते हैं, तो विसंगतियों पर प्रहार की आवश्यकता रेखांकित होती है। हम भी व्यंग्य की जबान रखते हैं। इसी व्यापक दृष्टिकोण के साथ 'व्यंग्य यात्रा' ने विभिन्न विधाओं के रचनाधर्मियों की रचनाएँ प्रकाशित की हैं। विश्वास है, इस बार सुभाष राय और मुकेश भारद्वाज की प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ प्रहार की भिन्न मुद्रा से आपका परिचय तो करवाएँगी ही, आपको सुखद आश्चर्य भी देंगी।

नरेंद्र मौर्य का यूँ जाना

21 अप्रैल की रात 10:40 पर, जब स्वर्गीय श्याम साकल्ले की बेटी ऋचा साकल्ले ने व्हाट्सएप पर मुझे सूचना दी कि नरेंद्र मौर्य का दुखद निधन हो गया है, तो बरसों पुराने दोस्त का यूँ जाना आहत कर गया। लगभग छह-सात बरस से इस प्यारे दोस्त के साथ संवाद न के बराबर था, फिर भी यह सोचकर तसल्ली रहती कि वह है और कभी न कभी संवाद होगा। उस रात यह तसल्ली भी दगा दे गई। रात भर पुरानी स्मृतियाँ बेचैन करती रहीं। ऐसे समय में जब दोस्तियाँ उत्पाद बन गई हैं, 'यूज एंड थ्रो' बन गई हैं, नरेंद्र मौर्य जैसे दोस्त का जाना अमूल्य खजाने के लुटने जैसा है।

अगली सुबह नरेंद्र मौर्य के पुराने सहपाठी नर्मदाप्रसाद उपाध्याय और पुराने दोस्त धीरेंद्र अस्थाना से लंबी बातचीत हुई। हमने पुरानी स्मृतियों को एक-दूसरे से साझा किया।

नरेंद्र मौर्य से मेरी अंतिम मुलाकात 14 सितंबर 2017 को भोपाल में हुई थी। उस दिन मुझे 'शरद जोशी राष्ट्रीय सम्मान' मिलना था। अस्वस्थ होने के बावजूद वह अपने दोस्तों के साथ विशेष रूप से मुझसे मिलने आया था।

नरेंद्र मौर्य से जुड़ी स्मृतियाँ ताजा हुईं तो श्रद्धेय नरेंद्र कोहली से जुड़ी स्मृतियाँ भी ताजा हो गईं। नरेंद्र मौर्य, नरेंद्र कोहली के लेखन और व्यक्तित्व के भक्त जैसे प्रशंसक थे। शायद 1977 की बात है जब मैं, नरेंद्र कोहली और उनका पुत्र कार्तिकेय- हरदा, खंडवा, इंदौर आदि की यात्रा पर गए थे। वैसे तो नरेंद्र मौर्य किसी की आवभगत दिल खोलकर करने के लिए प्रसिद्ध था, पर उस दिन तो जैसे उसके भगवान आए थे। इस आत्मीय वातावरण में मेरी और नरेंद्र मौर्य की मित्रता भी बहुत गहरी हो गई।

नरेंद्र मौर्य मुझसे तीन वर्ष बड़े थे। मुझे याद है कि 'सारिका' में प्रकाशित उनकी कहानी 'कोलंबस जिंदा है' ने तहलका मचा दिया था। इस पर दीप्ति नवल और फारूक शेख को लेकर शायद 'साथ-साथ' फिल्म बनी और बेहद चर्चित हुई। नरेंद्र मौर्य कमलेश्वर के चहेते रचनाकारों में से थे। उन्होंने 'समांतर लघुकथाएँ' नाम से संकलन भी संपादित किया था, जिसमें मुझे भी शामिल किया था।

1995 में हरिशंकर परसाई के जाने के कुछ समय बाद नरेंद्र मौर्य ने 'सतपुड़ा लोक सांस्कृतिक परिषद' के तत्वावधान में 'हरिशंकर परसाई स्मृति सम्मान' की घोषणा की थी। मेरा सम्मान बढ़ाते हुए पहला 'हरिशंकर परसाई स्मृति सम्मान' 1 मई 1997 को हरदा में मुझे दिया गया था। बेटे की आत्महत्या और ललिता की आकस्मिक मृत्यु ने उसे तोड़ दिया था। वह बहुत अस्वस्थ रहने लगा था। अपने युवा समय में जो नरेंद्र मौर्य रचनात्मक दृष्टि से अति सक्रिय और लोकप्रिय था, वही बेनाम सा जीवन जीते हुए 80 वर्ष की आयु में अंतिम यात्रा पर चला गया।

'व्यंग्य यात्रा' परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

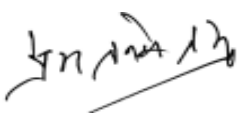

भिक्षाम् देहि...

शुभचिंतकों!

'व्यंग्य यात्रा' को आर्थिक दृष्टि से भी समृद्ध करने के लिए शीला झुनझुनवाला ट्रस्ट, प्रताप मोहन भारतीय, संदीप अवस्थी, सुधा कुमारी, श्रीकांत चौधरी, सूर्यकांत नागर, रविकुमार, सूर्यकांत शर्मा, पद्माकर व्यास, टाटिया विश्वविद्यालय और जगदीश सिंह का आभार।

सेवाराम त्रिपाठी, रीवा

व्यंग्य यात्रा का ताजा अंक यानी जनवरी-मार्च-86 मेरे सामने है। इसके यशस्वी संपादक प्रेम जनमेजय हैं। यशस्वी इसलिए कि वो व्यंग्य-हास्य-विनोद और उसकी तमाम इतर धाराओं को एक साथ समेटने और साधने का उपक्रम कर रहे हैं। यह पूरी प्रॉसेस उनके लिए बाएं हाथ का खेल जैसा है। हरिशंकर परसाई और कमला प्रसाद जी के साथ वसुधा पत्रिका निकालते हुए मेरे अलग अनुभव रहे है क्योंकि वह पत्रिका एक विचारशीलता, जीवन की आपाधापियों और संघर्षों को केंद्र में करती रही है। छापा हमनें सभी को, अच्छी रचनाशीलता को भरपूर जगह दी। विभिन्न परिक्षेत्रों की वैचारिकी को भी स्थान दिया। विशेषता यह कि अच्छी रचनाएं हों। किसी अच्छी साहित्यिक पत्रिका को मैं अच्छे लेखकों कलाकारों का तपोवन मानता हूँ, लेकिन यह उम्मीद सभी पत्रिकाओं से नहीं की जा सकती? वसुधा का आलोचनात्मक रुख रहा है। व्यंग्य यात्रा का काम दूसरा है वह व्यंग्य लेखन और उसके समानांतर चल रहे अन्य स्वरूपों को बिना किसी भेदभाव के अपने यहाँ जगह देती रही है। और दे रही है। उसकी कोशिश होती है कि यहाँ सभी धाराएं और उन पर जो सोचा-विचारा जा रहा है वह इस पत्रिका में घिर कर आए। संपादक व्यंग्य यात्रा का काम केवल धाराओं को समेटना भर नहीं है बल्कि उन पर प्रोजेक्ट के रूप में काम भी करना है और उन लोगों को सामने लाना भी है। उन्हें लोक प्रिय बनाना भी है। उनके कृतित्व को किताबों के फार्म में लाया भी गया है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। 'व्यंग्य यात्रा' की घोषणा है कि वह व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी है, व्यंग्य की आलोचनात्मक त्रैमासिकी नहीं। लेकिन उसके लिए उसकी कोशिश जारी है। इसे इस रूप में समझना भी नहीं चाहिए। हाँ, उनके यहाँ कभी-कभी व्यंग्य आलोचना की रूपरेखाएं बनती हुई देखी जा सकती हैं या बनती रहती हैं। यह एक अलग चीज है। उनको तरजीह भी दी जाती है।

प्रेम जनमेजय समृद्ध अंक निकालने के लिए ख्यात भी हैं। यह अंक भी काफी समृद्ध है। इसमें तीन ध्रुव हैं। एक हिंदी व्यंग्य के संक्रमण की चिंताएं। जाहिर कि अब तो व्यंग्य के संक्रमणों का एक बड़ा परिसर भी निर्मित हो गया है। किंतु परन्तु के बावजूद व्यंग्य लेखन की विविध धाराएं सक्रिय हैं। व्यंग्य यात्रा व्यंग्य लेखन की आवाजों को रखने वाला उपक्रम बन चुकी है। उसकी जानकारियां भी आएंगी। व्यंग्य की विसंगतियों की खोज-खबर भी होगी। व्यंग्य लेखन के संक्रमण को सामने लाने का प्रयत्न भी हुआ है। दूसरा है त्रिकोणीय। इसमें दो व्यंग्य लेखकों के त्रिकोणों की दुनिया भी है। एक त्रिकोण श्री संतोष खरे पर है और दूसरा श्री पिलकेंद्र अरोरा पर। मेरी जानकारी में पहली बार इतनी शिद्दत के साथ वरिष्ठ व्यंग्यकार संतोष खरे पर कुछ बातें रेखांकित हुई हैं। अब वो युवा भी नहीं हैं। काफी उम्रदराज भी हैं। लिख रहे हैं बिना किसी हिचक के एक लंबे अरसे से। विघ्न संतोषी उनका बाल-बाँका नहीं कर पाए। हाँ, न उनका ज्यादा मिलना-मिलाना होता और न अपने आपको प्रॉजेक्ट करने के उद्यम ही होते हैं। वो निहायत शरीफ क्वॉलिटी के आदमी हैं। ऐसे सीधे-सादे आदमी पर भी विमर्श हुआ और उन पर भी फोकस किया गया है। लोगों को पता तो चला कि वो भी व्यंग्य लिखते रहे हैं लेकिन काफी शालीन तरीके से। हालांकि व्यंग्य लेखन में शालीनता का क्या काम। शरीफ लोगों को कोई घास भी नहीं डालता। अब जाकर लोगों को उनका लेखकीय बुजबुजा चला और कायदे से शिनाख्त भी हुई। जाहिर सी बात है कि संतोष खरे सूचनावीर नहीं हैं और न कोई किसी प्रकार का अपनी उपस्थिति के लिए

प्रयास करने वाले। इस प्रयास के लिए और उन पर ध्यान दिलाने हेतु संपादक प्रेम जी को अशेष बधाई। संतोष खरे जी का आत्म साक्षात्कार पढ़ें। उनकी सादगी और धैर्य तो देखें ही उनका संघर्ष भी देखें। ऐसी कुछ रूपरेखाएं रेखांकित हुई हैं। कई लोगों के आलेख हैं।

श्री पिलकेंद्र अरोरा पर विस्तारित सामग्री है। उन पर जब तब कुछ न कुछ देखता सुनता पढ़ता रहा हूँ। उनके व्यंग्य संसार को व्यंग्य लेखन के संगी साथी भरपूर जानते हैं। इस त्रिकोणीय से उनकी रचनात्मक दुनिया ज्यादा और ज्यादा खुलेगी। उन पर कई लोगों ने चर्चा की है।

अंक में काफी व्यंग्य रचनाएं हैं और इधर जो मैंने पढ़ा है पर भी भरपूर सामग्री है। जैसे सुभाष राय की आत्म संभवा अंडाल, इतिहास के सीने पर एक 'प्रेमपत्र'। उसी तरह सूरज प्रकाश द्वारा संपादित 'मेरे लिखने की मेज' पर कई लोगों की प्रतिक्रियाएं छपी हैं। प्रताप सहगल के तीन व्यंग्य नाटकों पर हरिशंकर राढ़ी की लंबी टीप भी है। विस्तार न हो इसलिए संक्षेप में।

'व्यंग्य यात्रा' की धाक जारी रहे। यही कामना है।

अरविंद तिवारी, शिकोहाबाद

व्यंग्य यात्रा का जनवरी-मार्च 2026 अंक मेरे हाथ में है। पढ़ते हुए मुझे अपनी कॉलोनी की एक दुकान याद आई, जिसमें परचून के साथ ही डेली नीड्स की वस्तुएं हर समय उपलब्ध रहती हैं। किराना, अंडर गारमेंट्स, कॉस्मेटिक सामान से लेकर अमूल दूध, ब्रेड सब कुछ उपलब्ध है। आपको किसी अन्य दुकान पर जाने की जरूरत नहीं।

व्यंग्य यात्रा में व्यंग्य रचनाओं के साथ विविध प्रकार की साहित्यिक सामग्री भी होती है। सबसे महत्वपूर्ण व्यंग्य चिंतन होता